मधुबन ओम् शान्ति अंक 274 मई 2015

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-04-15)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अपने स्व-स्वरूप, ब्राह्मण स्वरूप और भविष्य देव स्वरूप में स्थित रहने वाले, सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वन्डरफुल हम सबका मीठा बाबा और वन्डरफुल बाबा का पार्ट, कैसे बाबा ने पूरी सीज़न में नये-नये प्रकार की सुन्दर अनुभूतियां कराई! इतने सब बच्चों को अपनी वरदानी दृष्टि और वाह वाह के मीठे साज़ों से स्नेह की पालना देते हुए खूब भरपूर किया। इस लास्ट टर्न में भी 25 हजार से अधिक भाई बहिनें देश विदेश से शान्तिवन में पहुंचे हुए थे। दादी गुल्जार तबियत कमजोर होने कारण मुम्बई पारला सेवाकेन्द्र पर ही थी, फिर भी मीठे बाबा ने बच्चों के प्यार का रिटर्न दिया। वह तो आप सभी ने अनुभव किया ही होगा। बच्चे जब दिल से मेरा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा कहते हैं, तो बाबा भी बच्चों को रेसपान्ड देने बिगर रह नहीं सकता। इस बार शान्तिवन में 9 तारीख को सभी ने रात्रि 9 बजे से सवेरे 5 बजे तक अखण्ड योग भट्ठी की, तो बाबा भी अपना वतन छोड़कर पारला में भोग के समय स्वयं पधारे और सभी बच्चों को वरदानी हस्तों से वरदान देते, स्नेह भरी दृष्टि के साथ मधुर महावाक्यों से भरपूर किया। बाबा का बच्चों से, बच्चों का बाबा से और आपस में हम सबका जो स्नेह भरा सम्बन्ध है यह बहुत-बहुत सुखदाई है। जी चाहता है ऐसा मिलन सदा मनाते रहें।

बाकी तो यह बना बनाया ड्रामा है, ड्रामा की नॉलेज जो मीठे बाबा ने दी है, वह अचल अडोल एकरस बना देती है। जैसे सारा दिन बाबा के सिवाए और कुछ याद नहीं आता, ऐसे ड्रामा भी सदा याद रहता है। ड्रामा अनुसार हर एक का अच्छे से अच्छा पार्ट नूंधा हुआ है। उस नाटक में तो पार्टधारियों को अदली बदली कर सकते हैं पर इस ड्रामा में एक्टर चेंज नहीं हो सकते। जो सदा ऐसे निश्चयबुद्धि विजयन्ती हैं वह व्यर्थ से मुक्त हैं। उन्हें जरा भी देह अभिमान रह नहीं सकता। जितना देही-अभिमानी अवस्था रहती है उतना मन बुद्धि का भटकना, लटकना, चटकना सब छूट जाता है। बुद्धि में अच्छे विचार करने की ताकत आ जाती है। जब ज्ञान की सच्चाई चित्त के अन्दर चली जाती है तो योग भी सहज लग जाता और आत्मा सत् चित् आनंद स्वरूप का अनुभव करने लगती है। मन कभी किसी की कमी कमजोरी तरफ नहीं जाता, चिंतन में सदा एक बाबा ही रहता है।

तो इस अन्तिम जन्म की अन्तिम घड़ियों में पढ़ाई पर ऐसा ध्यान देना है जो कदम कदम में पदमों की कमाई होती रहे। बाबा की याद में रहने से पहले शान्ति का अनुभव होता, फिर प्रेम में समा जाते, फिर देह और सम्बन्धों से न्यारे प्यारे बन जाते। किसी भी व्यक्ति या वस्तु में जरा भी अटैचमेंट नहीं रहती। तो ऐसी चेकिंग करके हर एक को अपना चार्ट रखना चाहिए।

बाकी अभी तो मीठे बाबा की यह सीजन पूरी हुई। अब मधुबन के तीनों स्थानों पर विशेष सेवाओं के साथ योग भट्ठियों के कार्यक्रम चलेंगे। इस बार मार्च में वार्षिक मीटिंग के समय पूरे साल के सब प्रोग्राम बन गये हैं, वह तो आप सबको मिल ही जायेंगे। मधुबन तो सदा बेहद सेवा की खान है। जो भी बाबा की इस तपस्या भूमि, चरित्र भूमि पर आते हैं खूब भरपूर होकर जाते हैं। अच्छा, हमारे साथ-साथ हमारी मीठी दादी गुल्जार की और अपने निर्वैर भाई की भी बहुत-बहुत स्नेह भरी याद स्वीकार करना जी।

अच्छा-सबको याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष (मई मास) के लिए विशेष होम वर्क

A) परमात्म प्यार में सदा लवलीन रहो

1) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कभी कोई परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

2) परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है। लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है–न्यारा बनना। जितना न्यारा बनेंगे उतना परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त होगा।

3) परमात्म प्यार में ऐसे समाये रहो जो कभी हद का प्रभाव अपनी ओर आकर्षित न कर सके। सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहो जिससे रूहानियत की खुशबू वातावरण में फैल जाए।

4) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं और साथी बन सदा साथ निभाते हैं, तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो।

5) बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो–मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो, दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ।

6) जो प्यारा होता है, उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा–तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते। और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

7) परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो तो इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते रहेंगे। परमात्म-प्यार उड़ाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

8) यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींच कर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाओ तो अनेक दु:ख भूल जायेंगे और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगेंगे।

9) जीवन में जो चाहिए अगर वह कोई दे देता है तो यही प्यार की निशानी होती है। तो बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं। साथ-साथ श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी देते हैं, जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो – यही परमात्म प्यार है।

10) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती ।

11) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवान मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है 'सहज योगी जीवन'।

12) जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है। तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता, इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये... अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ।

13) बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें।

14) आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

15) बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है–समान, कर्मातीत बनो। 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कर्मेन्द्रियां आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म

नहीं करो।

16) जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता हो, उसी सम्बन्ध से भगवान को अपना बना लो। दिल से कहो मेरा बाबा, और बाबा कहे मेरे बच्चे, इसी स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह छत्रछाया का काम करता है, इसके अन्दर माया आ नहीं सकती।

B) सदा लवलीन स्थिति का अनुभव करो

1) सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

2) किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा दो, बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो, बिन्दी में समा जाओ तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी और समय बच जायेगा, मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे। कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो।

3) लवलीन स्थिति वाली समान आत्मायें सदा के योगी हैं। योग लगाने वाले नहीं लेकिन हैं ही लवलीन। अलग ही नहीं हैं तो याद क्या करेंगे! स्वत: याद है ही। जहाँ साथ होता है तो याद स्वत: रहती है। तो समान आत्माओं की स्टेज साथ रहने की है, समाये हुए रहने की है।

4) जब मन ही बाप का है तो फिर मन कैसे लगायें! प्यार कैसे करें! यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता क्योंकि सदा लवलीन रहते हैं, प्यार स्वरुप, मास्टर प्यार के सागर बन गये, तो प्यार करना नहीं पड़ता, प्यार का स्वरुप हो गये। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं।

5) परमात्म प्यार इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म का आधार है। कहते भी हैं प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान है। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। दुनिया एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से पलते हो अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। तो सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।

6) कर्म में, वाणी में, सम्पर्क व सम्बन्ध में लव और स्मृति व स्थिति में लवलीन रहना है, जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। आप बच्चे बाप के लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

7) मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रह भिन्न-भिन्न प्रकार की क्यू से निकल, बाप के साथ सदा मिलन मनाने की लगन में अपने समय को लगाओ और लवलीन स्थिति में रहो तो और सब बातें सहज समाप्त हो जायेंगी, फिर आपके सामने आपकी प्रजा और भक्तों की क्यू लगेगी।

8) आप गोप-गोपियों के चरित्र गाये हुए हैं - बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख लेना और मग्न रहना अथवा सर्व-सम्बन्धों के लव में लवलीन रहना। जब कोई अति स्नेह से मिलते हैं तो उस समय स्नेह के मिलन के यही शब्द होते कि एक दूसरे में समा गये या दोनों मिलकर एक हो गये। तो बाप के स्नेह में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।

9) एक तरफ बेहद का वैराग्य हो, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन रहो, एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आओ। ऐसे लवलीन बच्चों का संगठन ही बाप को प्रत्यक्ष करेगा।

10) जो सदा बाप की याद में लवलीन अर्थात् समाये हुए हैं। ऐसी आत्माओं के नैनों में और मुख के हर बोल में बाप समाया हुआ होने के कारण शक्ति-स्वरुप के बजाय सर्व शक्तिवान् नज़र आयेगा। जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रुप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था, ऐसे आप बच्चों द्वारा सर्वशक्तिवान् दिखाई दे।

11) जो सदा बाप की याद में लवलीन रह मैं-पन की त्याग-वृत्ति में रहते हैं उन्हों से ही बाप दिखाई देता है। आप बच्चे नॉलेज के आधार से बाप की याद में समा जाते हो तो यह समाना ही लवलीन स्थिति है, जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मग्न हो जाते हो तब बाप के समान बन जाते हो।

12) जैसे कोई सागर में समा जाए तो उस समय सिवाय सागर के और कुछ नज़र नहीं आयेगा। तो बाप अर्थात् सर्वगुणों के सागर में समा जाना, इसको कहा जाता है लवलीन स्थिति। तो बाप में नहीं समाना है, लेकिन बाप की याद में, स्नेह में समा जाना है।

13) जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देह-भान का, दिन-रात का, भूख और प्यास का, अपने सुख के साधनों का, आराम का, किसी भी बात का आधार नहीं।

वे सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन रहते हैं। जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट-माइट रूप बन जाते हैं।

14) सेवा में सफलता का मुख्य साधन है–त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लग्न में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे–तपस्वी। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

15) जैसे लौकिक रीति से कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है, आशिक है, ऐसे जिस समय स्टेज पर आते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना स्नेह का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 2-4-15 *मधुबन*

"बाबा सच्चाई पर राज़ी है इसलिए दिखावा नहीं करना, न धोखे में आना, न किसी को धोखा देना"

(दादी जानकी)

बाबा, मुरली, मधुबन यह तीनों हमारे लिए बहुत जीयदान देने वाले हैं। जो अच्छी तरह से मुरली सुनते, पढ़ते हैं बाबा उनको देख खुश होता है। ब्राह्मण है तो कैसा..... फिर क्षत्रिय है तो ऊं आ करता है थोड़ा बिचारा, वैश्य को चिंता होगी, शुद्र का नाम नहीं लेना। जरा भी अन्दर से कोई बुरी बात न हो। जब संगमयुग का ज्ञान मिला, कलियुग की अन्त है, सतयुग की आदि है, बीच में हम बैठे हैं या खड़े हैं या चलते-फिरते भी संगम याद है।

संगम पर भटकी हुई आत्मायें बाप से मिली हैं। पहले बुद्धि कितना भटकती थी, अभी बाप के मिलने से मन शान्त हो गया, मन शान्त हो तब बुद्धि योग लगे। माया देखती है यह मेरे गुलाम अब परमात्मा बाप के बन गये, अब मैं भी इनको खींचकर वापस ले लूँ। माया कितने प्रकार की आती है! अभी हम तो मायाजीत बन गये ना, तो सोचते नहीं हैं। योगाग्नि में माया को जला दिया। उसकी अस्थियों को भी ज्ञान गंगा में डाल दिया। जब किसी की अर्थी को जलाने के लिए शमशान में ले जाते हैं तो अर्थी का मुँह घुमा करके शमशान के तरफ कर देते हैं फिर वापस नहीं आना। कितना भी प्यारा होगा तो भी, वो गया तो रोयेंगे भी परन्तु अर्थी वापस यहाँ मुँह न करे, यह बड़ा ध्यान रखते हैं इसलिए बाबा ने जीते जी मारा, जीते जी मर गये तो ब्राह्मण मरजीवा हो गये इसलिए गुरूवार को भोग लगाते हैं ना।

हम ब्राह्मण हैं ना! भोग लगाने की सिस्टम प्यारे बाबा ने तब शुरू कराई जब बाहर की सेवायें शुरू हुई, बाबा ने कहा भोग लगना चाहिए। पहले तो बाबा का ही समर्पण किया हुआ था, बाबा को देख जो और अच्छी-अच्छी आत्मायें थी उन्होंने अपने आपको समर्पण किया। अच्छी माना जो बाप को फॉलो करें। फॉलो फादर और सी फादर करना दोनों साथ-साथ हैं क्योंकि बाप को न देख और कहीं इधर उधर देखेंगे तो फॉलो उसको करेंगे। हमने और कोई बात देखी या सुनी.... तो क्यों देखा, सुना? क्या हमें उसको फालो करना है! सी फादर फॉलो फादर का महान मन्त्र, अच्छा यंत्र है। वो यंत्र तो टाइम मनी एनर्जी खर्च किये बिना नहीं मिलते हैं। यहाँ हमारा खर्चा कुछ भी नहीं है और कमाई कितनी है! सेकेण्ड में साइलेंस में उड़के चले जाओ। तो इससे सारी एनर्जी, टाइम, मनी सब सफल होता है।

जब मेरा बाबा दिल से निकलता है तो शक्ति आ जाती है। शान्त रहने की भी शक्ति, शान्त रहने से असली शान्ति, निज शान्ति.. जिससे शक्ति जमा होती है, शक्तियों को जैसे अवतार बना देते हैं। जैसे मैं पहले कुछ और थी, अभी कुछ और है। क्या है अभी, जरा भी इतना कोई संकल्प नहीं, वो जो शान्ति है वो शक्तिशाली शान्ति है। वायुमण्डल को शान्त

बना देती है। बाबा के इतने सारे बच्चे यहाँ बैठते हैं तो सब शान्त बैठते हैं। यहाँ डायमण्ड हॉल में बैठते, डायमण्ड लाइफ क्या होती है वो अनुभव हो जाता है। ड्रामा में हीरो एक्टर बनना हो तो हीरे मिसल बनो। हीरो एक्टर और हीरे मिसल लाइफ सच्चा हीरा क्योंकि आजकल की दुनिया में इमीटेशन है, दिखावा बहुत है। भारत में शुरू-शुरू में सबसे पहले जब इमीटेशन हीरे (नकली हीरे) निकले थे, लगते थे जैसे सच्चे हीरे हैं। तो सच्चे हीरों के व्यापारियों को बहुत चिंता लगी, अभी क्या होगा? देखने में भी इतनी सुन्दर, शो ज्यादा पर अन्दर झूठ है। यहाँ भी ऐसे चलते-चलते कई अच्छे हीरे जैसे इमीटेशन बन जाते हैं। तो ऐसे झूठे जो होते हैं वो सच को परख भी नहीं सकते हैं। सच्चा बन भी नहीं सकते हैं। तो यह ज्ञानमार्ग है, भक्तिमार्ग में बहुत मिक्सचर किया, दिखावा बहुत हुआ। भक्ति भी ठगी की करते हैं। तो अभी इस तरह से यहाँ दिखावा नहीं चाहिए, सम्भालो अपने आपको क्योंकि सच्चाई पर बाबा राज़ी है। न धोखे में आना, न धोखा देना। हीरों के व्यापारियों को बड़ी अच्छी परख होती है इसलिए उन्हें कोई ऐसे ठग नहीं सकते हैं। ऐसे सच्चे व्यापारी कोई विरले ही होते हैं जो झूठ ठगी से उनकी बनती नहीं है।

तो इतनी ऊंची पढ़ाई और पढ़ाने वाला कौन? इस पढ़ाई में अबसेन्ट नहीं रहना चाहिए। अपसेट होना माना अबसेन्ट होना। बुद्धि को सेट रखो इसलिए अन्दर बाहर, दिन रात मैं कौन, मेरा कौन! मैं आत्मा हूँ, तो कौन-सी आत्मा हूँ? कल्प पहले वाली हूँ। अन्तर्मुखी माना सदा सुखी। बाहर्मुखता माना यह जो शरीर है, जिसमें मुँह, आंखें, कान हैं... उनसे बुरा न सुनो, न देखो, न बुरा बोलो... यह है अन्तर्मुखता। हर बात का अगर हम अर्थ समझके स्वरूप में आते हैं। तो सही अर्थ में स्थित होने से सच्चे व्यापारी बन, जिससे व्यापार करेंगे वो भी ऐसा बन जाते हैं। वो कोई हमारा ग्राहक नहीं बना, हमारे जैसा बना।

ऐसे ही बाबा कहता है सेन्टर पर कोई ग्राहक (स्टूडेन्ट) आता है, तो उसे छोड़ो नहीं, एकदम अच्छा बिजनेस करके, धन्धा करके किसी को बाप समान बना दो। अच्छे बिजनेसमेन जो होते हैं वो ग्राहकों की बहुत खातिरी करते हैं ताकि वो कहीं और कोई दुकान पर न जाये। जब तक बाबा समान बनो तब तक कम-से-कम आप समान किसी को ऐसा बाबा का बच्चा तो बना दो। हम कहते हैं बाबा ने अपना बच्चा बनाके माया से बचा लिया। कहाँ मोह माया ममता के जंजाल में फंसे थे, काम, क्रोध चलो चला गया पर लोभ मोह भी कम नहीं है। लोभ मोह थोड़ा-थोड़ा है, वो भी धोखे में आ जाते हैं, धोखा दे देते हैं। हमको क्या करने का है? जैसे हमारी अर्थी को लेके जायेंगे, वो भी तैयार रखी है। योग अग्नि में संस्कारों का संस्कार कर लिया। फ्री होके फरिश्ता बनके बैठे हैं। फरिश्ते का और कोई रिश्ता नहीं होता है।

दूसरा क्लास

"मनमत वाली बातें टाइम वेस्ट करती हैं इसलिए अपने को सम्भालो, सदा श्रीमत पर चलते रहो" (दादी जानकी)

बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए जो सदा खुश रहें, आबाद रहें इसलिए आजकल मेरे को यह पक्का है खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद करो। बाबा को नहीं बिसरो बाकी बातों को याद नहीं करो क्योंकि बाकी जो बातें हैं वो टाइम वेस्ट करती हैं। श्रीमत के सिवाए और जो बाबा सिखाता है उसके सिवाए बाकी कोई भी मनमत वाली बात या कोई भी बात है वो टाइम वेस्ट करती है। तो हमेशा सम्भालना चाहिए क्योंकि संगम का टाइम बहुत वैल्युबुल है।

आजकल साकार मुरलियाँ ऐसी हैं, समझो डराने वाली नहीं है, पर खबरदार होशियार करने वाली हैं। बाप हमारा धर्मराज भी है, ऐसी गलती कोई न करे.. हमारे बाबा की यही इच्छा है। ऐसे बच्चे इतना याद में रहें जो विकर्म विनाश

हो जायें और श्रेष्ठ कर्म का बल जमा होता जाये। इतनी बात सिर्फ ध्यान पर रहे क्योंकि श्रेष्ठ कर्म जो बाबा सिखलाता है, जिसको करने से फायदा बहुत है, पर उसको करने लिए बल बहुत चाहिए।

आप सभी का तन अभी यहाँ डायमण्ड हॉल में है, तो मन कहीं और जगह जाता है? नहीं जायेगा। दो ठिकाने मिले हैं एक परमधाम निराकारी दुनिया, दूसरा वैकुण्ठ यही हमारी दुनिया है। निराकारी स्थिति में रह करके निमित्त साकार तन में हैं परन्तु जैसे साकार बाबा सदा ही अव्यक्त दिखाई पड़े, सम्पूर्ण दिखाई पड़े जो बाबा से दृष्टि लेवे, सेकेण्ड में पार हो जाए। तो बाबा हमको इतने अच्छे अनुभव कराता है, तो दु:ख गम काहे का। और भगवान के वरदानों से सेवा ऐसी होती रहे जो बाबा ने दिया है वो सबको मिले। ऐसे बाबा के मिलने से बाबा की गोदी में झूल रहे हैं। अच्छा।

तीसरा क्लास

"निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा के लिए इगोलेस वाइसलेस बनो, सच्चाई और नम्रता को धारण करो" (दादी जानकी)

मीठे बाबा ने कल सभी को कितना खुश कर दिया। कितनी अच्छी विधि बताई खुशी बांटने से बढ़ती है, कभी कम नहीं होती। खुश रहने के लिए बाबा ने इतनी बधाईयां दी, मुबारकें दी। फिर अगली सीजन के लिए बाबा ने जो रिटर्न मांगा है, निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा, यह प्रामिस करना है। पहले निर्विघ्न स्थिति ऐसी रहे, एक हैं विघ्न डालने वाले, दूसरे हैं विघ्नों से घबराने वाले और तीसरे हैं विघ्नों को खत्म करने वाले। मैं कौन हूँ, हर एक सोचें, अपने आपको देखे। निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा में 12 वैल्युज़ 8 शक्तियां, कितना काम करती हैं। बाबा ने कहा समय खजाना है। समय है खुश रहने का, खुशी बाँटने का। तो सदा खुश कैसे रहें? क्वेश्चन नहीं है पर अन्दर से अडोल अचल स्थिति बनाने के लिए मैं मेरा से मुक्त रहें। मैं का अभिमान है, मेरा में अटैचमेंट है। दिल से देखो इन दोनों से फ्री हैं? जब बाबा ने कहा प्रामिस करो तो आप लोगों ने जरूर सोचा होगा। प्रामिस करना, प्रतिज्ञा को पालन करना उसके लिए मैं अनुभव से राय देती हूँ, वैल्युज़ जीवन में धारण करो। सत्यता, नम्रता, धैर्यता और गम्भीरता से मधुरता आटोमेटिकली आती है।

बाबा ने कहा तुम तो मौज में रहो, तुमको देख और भी मौज में रहें, मौज में कौन रहता है? जो कभी मूंझता नहीं है। बात कोई भी आये, ऐसे नहीं होना चाहिए, ऐसे होना चाहिए, यह शब्द जो हैं ना, सारी खुशी खत्म कर देता है। कोई कहे मुझे 20 साल का अनुभव है, क्या अनुभव है? क्या दूसरे के अवगुण देखने का अनुभव है या अपने अवगुण निकालने का अनुभव है? माया ने हमको अपना बनाकर देह अभिमानी बना दिया। अब ऐसी माया को जीतने के लिए इगोलेस, वाइसलेस बनना है। सच्चाई और नम्रता के आगे इगो बिचारे का वश नहीं चल सकता। अगर कोई भी बात आयेगी तो शुभ भावना शुभ कामना रखने से, ऐसा व्यवहार करने से चली जायेगी।

जहाँ मुहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं, जहाँ मेहनत है वहाँ मुहब्बत नहीं। कितना बाबा ने सहज कर दिया है। कल बाबा ने वाह बच्चे वाह कितना बारी कहा, हम बच्चों ने वाह बाबा वाह नहीं कहा! अभी कहो वाह बाबा वाह! बाबा आपने हमारी बुद्धि का ताला तो खोला, अभी बुद्धि को इतना काम लायक बनाया, मैं-पन वाली बुद्धि से काम नहीं लेना है। बाबा ने अपना काम कराने के लिए बुद्धि को लायक बनाया है। काम बाबा का है, मेरा नहीं है। हम क्या कर सकती हूँ! कदम कदम पर यहाँ देखो, सबको खुशी क्यों होती है? दुनिया में मनुष्य शान्ति ढूँढते हैं, यहाँ शान्ति के पहले खुशी बहुत है। खुशी में शान्ति है, शान्ति में प्रेम है। शान्ति, खुशी, प्रेम। वायुमण्डल को इतना पॉवरफुल बनाता है जो भगवान भी कहे वाह बच्चे वाह! कभी भक्ति में नहीं समझा था भगवान कहेगा कि वाह बच्चे वाह! हम भक्तों को भगवान

मिला है, वह कहता है वाह बच्चे वाह! भक्त बच्चे बन गये। मैं तो आँखों से आँसू बहाते गीता भागवत पढ़ते कहती थी मुझे अर्जुन क्यों नहीं बनाया! मुझे गोप गोपी क्यों नहीं बनाया! भगवान को उल्हना देती थी। अभी भगवान ने अर्जुन सम भावना वाला बना दिया, भगवानुवाच सुन रहे हैं, कांध हिला रहे हैं। अर्जुन सदा कांध हिलाता है। दिल को बात लगती है। बाबा जब मुरली चलाता है तो कबूतर की तरह हूँ, हूँ..करते हैं! कबूतर का गायन बहुत है। भक्ति में कबूतर को बहुत खिलाते हैं। कबूतर अकेला कभी नहीं खायेगा, सभी मिलकर खाते हैं। एक हूं, हूं करता दूसरा कबूतर कहाँ अकेला नहीं बैठता। उसकी युनिटी बहुत है। तो खुशी है युनिटी में। एक ने कही दूसरे न मानी, शिवबाबा कहे दोनों हैं ज्ञानी। ऐसे नहीं बोलो यह ठीक नहीं करता, मेरा अनुभव यह कहता.. अरे शान्त करो ना।

अभी आज जो बाबा के बच्चे काम करते हैं, हम थोड़ेही कर सकते हैं। भगवान को जो कराना था वह कराया अभी शान्त रहना सिखाया है। जो बाबा ने किया कराया, करनकरावनहार बाबा कैसे है, यह भी अनुभव खुशी बढ़ाता है। ऐसे साक्षी होकर देखो, हर एक कैसे शान्ति से अपना काम कर रहे हैं। समय अनुसार खुश रहने में ही पदमापदम भाग्य है। अभी लाखों बाबा के बच्चे हैं, बाबा की हमारे प्रति प्रेरणा है - ऐसे चेहरे हो, ऐसी चलन हो जहाँ भी जायें, जहाँ भी कोई देखे उसका दु:ख चला जाए, खुशी आ जाए। जो खुश रहने वाले हैं आटोमेटिक उन्हें खुश रहने, खुशी बांटने का प्लैन टच होगा। दातापन के संस्कार हों। जो बाबा ने दिया है वह इमर्ज रहे। प्रैक्टिकल जीवन में हो। मैं तो खुश हूँ, लेकिन प्रैक्टिकल लाइफ में क्या है? क्या सब मेरे से खुश हैं? यह रेसपान्ड मिलना चाहिए। तो बाबा ने जो काम दिया है, सीजन आने के पहले वह अभी करना है, उसमें सोचना नहीं है। समय का खजाना.. शब्द याद करना। जरा भी संगम का समय कहीं व्यर्थ न जाये। अच्छा। ओम् शान्ति।

"बहुत समय का पुरुषार्थ हो तब अन्त मति सो गति अच्छी होगी"

(दादी गुल्जार रिवाइज क्लास)

इस वरदान भूमि के कोने-कोने में वरदान भूमि में समाये हुए हैं। इसलिए यहाँ से सबको बहुत कुछ प्राप्तियां हो जाती हैं। यहाँ इतना बड़ा परिवार मिलता है, उन सभी ब्राह्मण आत्माओं की शुभ भावनायें और शुभ कामनायें जो एक दो के प्रति हैं, वह भी बहुत ही कुछ आत्मा में बल भरती हैं इसलिए इस भूमि का नाम ही है मधुबन, वरदान भूमि। तो जहाँ वरदान ही वरदान हैं, हर सेकण्ड में, हर कर्म में आप इस वरदान भूमि द्वारा अपने को वरदानों से भरपूर कर सकते हो। अभी कौन, कितना क्या करता है और क्या बनता है, वह तो खुद और खुदा ही जाने। खास यहाँ पर बेफिकर बादशाह की स्थिति का बहुत अच्छा अनुभव कर सकते हैं, करना चाहिए। यहाँ से जो जितना भरपूर होकर जाते हैं उतना फिर वह वहाँ जाकर सबको भरपूर करने की सेवा करते हैं।

तो भगवान का वरदान अगर हम नहीं स्वीकार करेंगे तो क्या स्वीकार करेंगे! भगवान के होते भी अगर हम जो बनना चाहें, जो परिवर्तन करना चाहें वह नहीं करते हैं तो कब बनेंगे और क्या करेंगे? तो हमेशा पहले यह सोचना चाहिए कि हमारा स्वमान क्या है? बाबा हमें क्या बनाना चाहते हैं! हमसे क्या करना चाहते हैं? हम जो चाहते हैं वह क्यों नहीं हो रहा है? गायन है कि जब स्वयं भगवान ने भाग्य बांटा तब तुम कहाँ थे? तो क्या यह गायन हमारा तो नहीं है? समस्या के समय क्यों, क्या को यूज़ न करके समाधान स्वरूप बनो। ज्ञान को स्पष्ट करने में भल यह क्यों, क्या यूज़ करो इससे भाषण तैयार हो जायेगा। मैं और मेरा में ममता न हो, नहीं तो बोझिल हो जायेंगे। बोझ से थकते हैं तो फिर कहेंगे बाबा, बाबा... अब कुछ करो। बाबा जो कहते वो न करके हम अपना दूसरा ही कुछ करेंगे तो क्या होगा! इसलिए किसी बात में संशय की उत्पत्ति कभी भी न हो क्योंकि इससे संकल्प हल्के होने कारण ढीले-ढाले पुरुषार्थी रह जाते हैं

फल स्वरूप किसी बात में हमें सफलता नहीं मिलती है। तो बहुत समय का एकरस पुरुषार्थ चाहिए तब ही अन्त मते सो गति अच्छी होगी। इस अकाले मृत्यु के समय में कभी भी किसी का कुछ भी हो सकता है। इसलिए हमें अपनी कमजोरियों को खत्म करके विशेषताओं को देखते अपने को विशेष आत्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी है वही तो यहाँ आकर पहुँचे हो। इसलिए अभी सभी अपनी विशेषता को जानो और उसको कार्य में लगाओ, अभिमान में नहीं आओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी और बुराई दबती जायेगी। इसलिए बाबा कहते हैं आप सदैव अपने स्वमान में रहो। ब्राह्मण जीवन की सम्भाल करो। समय की भी पहचान रखो। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

स्वयं को सेवाधारी समझ, नम्रचित्त रहो तो निरहंकारी बन जायेंगे

बाबा ने जो निरंहकारी रहने की बात कही यह बड़ी सूक्ष्म धारणा है। हरेक खुद से बहुत डीप जाके पूछे कि मेरे में 'मैं' 'मैं' 'मैं' कितनी है? यह मैं कहो, अहम् कहो.. यही सूक्ष्म अहंकार वा अभिमान है। हमने देखा प्यारे बाबा ने हर बात में, हर प्रकार से सदैव हम बच्चों को आगे किया, आगे रखा और खुद बड़े निरंहकारी रहे। हम बच्चों को सदा ही बहुत प्यार से नॉलेज दी, पालना दी, उमंग दिया आगे बढ़ाया, और सदा कहा पहले बच्चे, आगे बच्चे, यही बाबा की निरहंकारिता है। तो इस बार की मुरली में जो धारणा का विशेष महावाक्य है, जो साकार बाबा ने अन्तिम महावाक्य कहे हैं, उसी को चेक करो कि हम सूक्ष्म निर्विकारी हूँ! निराकारी स्थिति का तो अन्त तक पुरुषार्थ करना है, यही कर्मातीत बनने के लिये अन्त तक मेहनत है। निरंहकारी रहने के लिए तो बहुत ही नम्रता चाहिए। निरंहकारी के साथ नम्रता हो तो निरंहकारी सहज रह सकते हैं।

नम्रता का गुण भी हरेक में बहुत जरुरी है। बाबा हमें सबसे पहली यही धारणा देता है कि बच्चे निरंहकारी बनो अर्थात् नम्रता वाले बनो। निरहंकारी रहने से देह-अभिमान नेचुरली मिट जाता है। इसलिए सदैव चेक करो कि मेरे में देह-अभिमान कितना है? और नम्रता कितनी आई है? थोड़ा भी अहम् का नशा रहता तो वह नशे वाला निरंहकारी नहीं बन सकता है। हमें जो कभी कोई-कोई बात से नशा होता वाह! हूँ! हूँ!... यह है अहंकार, यह है देह-अभिमान। जो हमारे में नहीं चाहिए। बाबा मम्मा सदा हमारे सामने आते, इतना बड़ा ऊंचा बाबा सदा निरहंकारी रहा। ऐसी कोई मुरली नहीं होगी जिसमें बाबा यह वर्णन न करे कि यह उस बाबा का रथ है, बाबा करता, बाबा मुरली चलाता... कभी हमने बाबा को यह कहते नहीं सुना कि मैं करता हूँ, मैंने तुम्हें यह कहा, नहीं। बाबा कराता है। तो हमें भी बाबा यह सब सिखाते हैं। कभी भी किसी भी बात में थोड़ा भी सूक्ष्म में अभिमान या नशा होगा तो वह हमें कभी भी निरहंकारी नहीं बनायेगा। इसलिए निरहंकारिता का गुण इतना अच्छा है जो आटोमेटिकली सभी का प्यार मिलता है, सब स्नेही बन जाते हैं। ऐसा हमारा अनुभव कहता है।

मैं कभी भी खुद को मैं दादी हूँ, यह नहीं समझती हूँ। आता ही नहीं है हम दादी हैं। यह तो नाम है कोई दादी नाम से बुलावे या कोई प्रकाशमणि करके बुलाये। यह भी एक नाम है। बस। परन्तु हमारा ऊंचे ते ऊंचा बाबा बैठा है, उनसे बड़ा हमारा कोई नहीं जो हम किसको अभिमान दिखाऊं या आँख दिखाऊं या कोई नशा दिखाऊं। न कोई नशा है, न कोई अभिमान है, न कभी यह रहता कि हम हेड हूँ। आज दिन तक मैंने कभी भी नहीं समझा कि मैं हेड हूँ। हम तो सर्वेन्ट हैं। हम दादियाँ सेवाधारी हैं। दीदी दादियाँ माना ही है सेवाधारी। बाबा ने बड़े प्यार से हम सबको सेवाधारी बनाया है और इसमें ही हमें मजा आता, खुशी होती इसलिए जब बाबा ही लास्ट में कहता I am your obideant servent तो हम फिर कौन हैं? पर कईयों में मैं देखती हूँ बड़ा अभिमान रहता है। मैं कहता हूँ, यह ऐसे क्यों? यह अभिमान है। हम लोग सभी सर्वेन्ट हैं, सेवाधारी हैं। और बाबा ने हम सबको पुरुषार्थ दिया है देही-अभिमानी बनो। बस, यह पढ़ाई हमारी वन टू ऑल सबके लिए है कि देही-अभिमानी बनो। राजयोगी बनो। बस, इससे बड़ा और क्या पोजीशन चाहिए। हम हैं ही राजयोगी, बाकी अभिमान क्या करें? बेगर टू प्रिन्स हैं। बस। अच्छा - ओम् शान्ति।